आहारक शरीर

प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़,
पूर्व कुलपति, सिंघानिया विश्वविद्यालय, राजस्थान

कर्म में प्रवृत्ति के लिए शरीर की आवश्यकता होती है। आहारक, तेजस् और कार्मण बहुत ही सूक्ष्म शरीर होते हैं। एक हाथ का पुतला बनाया हुआ शरीर जिसे आहारक शरीर कहा जाता है। प्रीचनकाल में आहारक शरीर का प्रयोग ज्ञान प्राप्त करने के लिए किया जाता था। यदि किसी शिष्य से कोई प्रश्न पूछा जाए तो वह शिष्य आहारक शरीर के पुतले के माध्यम से उसे अपने गुरु के पास भेजकर प्रश्न का उत्तर जान लेता था। यह टेलोपैथी क्रिया है। विज्ञान की टेलोपैथी दर्शन का आहारक शरीर है।

विज्ञान की प्रयोगशाला में नित नए प्रयोग होते रहते हैं। किन्तु भारत के ऋषि–मुनियों ने विज्ञान के ज्ञान को शरीर की प्रयोगशाला में ही देख लिया था। भारत के ऋषि मुनि अपने शरीर को प्रयोगशाला बनाकर सत्य का अन्वेषण किया करते थे। पराविद्या जानने वाला व्यक्ति आहारक शरीर के माध्यम से ज्ञान प्राप्त कर लेता है। यह वाईब्रेशन पर काम करता है। पराविद्या, अपराविद्या ज्ञान की परम्परा, सम्प्रेषण की क्रिया आहारक शरीर के माध्यम से होती है। आहारक शरीर के माध्यम से एक स्थान से दूसरे स्थान पर भेजने की क्रिया भी होती है। इसके माध्यम से हर प्रकार का ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है।

मंत्रोच्चारण के माध्यम से किसी पुतला को बनाकर के जिसके पास भेजना होता है उसके पास भेज दिया जाता है। सम्प्रेषण की क्रिया बहुत सूक्षम होती हैं इस कार्य को कुछ लोग ही कर पाते हैं। राग–द्वेष क्षीण मनुष्य ही इस कार्य को सम्पादित कर पाता है। इसमें आत्मा से आत्मा के द्वारा सम्पर्क किया जाता है। जिस प्रकार मानव में जीवन है उसी प्रकार पौधों और पशुओं में जीवन स्वीकार किया गया है। सभी प्रकार के जीवों में पृथ्वी के कीटाणुओं में उसी प्रकार जीवन है। लेकिन लकड़ी, पत्थर आदि पौद्गलिक वस्तुओं में जीवन नहीं है। ये जड़ पदार्थ हैं। इन्हें अचेतन कहा जाता है।

चेतना भौतिक तत्वों का गुण नहीं है। भौतिक तत्वों में चेतना के संयोग से चेतना उत्पन्न होती हैं। वनस्पतियों और पशुओं में वातावरण के अनुकूल अपने को बनाने की एक प्रमुख विशेषता पाई जाती हैं। जिसके कारण बदलते हुए वैश्विक परिदृश्य में उनका अस्तित्व सुरक्षित रहता है। कुछ विशिष्ट प्रजातियां वातावरण के अनुकूल अपनी संरचना विशिष्ट प्रकार से करती हैं।

लैंगिक उत्पाद स्त्री और पुरुष के संसर्ग से होता है। पर्यावरण से जीवन प्रदान करने वाले पुद्गलों को एकत्रित कर जब आत्मा स्वतः जन्म धारण कर लेती है तो उसे सम्मूर्छन जन्म कहा जाता है। एकेन्द्रिय से लेकर असंज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्यंचों तथा असंज्ञी पंचेन्द्रिय मनुष्य सम्मूर्छन जन्म लेते हैं।

कुछ संज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्यंच भी सम्मूर्छन विधि से जन्म लेते हैं। सम्मूर्छन जन्म नर मादा के बिना संयोग से धारण हो जाता है। उपपाद जन्म केवल दैवी और नारकीय जीवों का होता है। अनुकूल परिस्थितियों के अभाव में सम्मूर्छन प्रक्रिया के माध्यम से जीवन सम्भव नहीं हो सकता। प्रत्येक वस्तु की उत्पत्ति हो सकती हैं किन्तु आत्मा की उत्पत्ति नहीं होती। आत्मा अजर–अमर, अविनाशी और स्थायी तत्व है। जीवों का आवागमन बना रहता है।

शरीर का अस्तित्व और विकास आंशिक रूप से डीएनए पर निर्भर करता है। अंगों का निर्माण, जोड़ों का निर्माण, ढ़ांचे का निर्माण और ऐसे ही दूसरे जीवित रहने के कार्य और शरीर वृद्धि डीएनए और नामकर्म के परिणाम है। वैदिक धर्म के अनुसार स्त्री के गर्भाशय में वीर्याधान की प्रक्रिया को गर्भाधान कहा जाता है। स्त्री का मासिक स्राव जब समाप्त होता है और जब उसके गर्भाशय में मनुष्य का शुक्राणु प्रवेश करता हैं तो ये भी गर्भाधान कहलाता है।

आत्मा जब गर्भ में प्रवेश करता हैं तो उस समय आत्मा इन्द्रियों से युक्त भी होता है तथा उनसे शून्य भी होता है। गर्भाधान के समय आत्मा भौतिक इन्द्रियों से तो शून्य होता है परन्तु सूक्ष्म इन्द्रियों सहित होता है। शरीर केवल औदारिक, वैक्रिय और आहारक ही नहीं होता, बल्कि तैजस और कार्मण भी होता है।

पर्याप्ति और प्राण जीव जन्तुओं और पशुओं के वास्तविक जीवित तत्व हैं। पर्याप्ति और प्राण दो ऐसी शक्तियां हैं, जो जीवन के नियामक हैं। प्राणी का जीवन प्राणशक्ति पर आधारित है।

प्राणशक्तियां दस हैं– स्पर्शन इन्द्रिय प्राण, रसन इन्द्रिय प्राण, घ्राण इन्द्रिय प्राण, चक्षु इन्द्रिय प्राण, श्रोत्र इन्द्रिय प्राण, मन बल, वचन बल, काय बल, श्वासोच्छ्वास प्राण, आयुष्य प्राण। ये दसों प्राण छः पर्याप्तियों में समाहित हैं– इन्द्रिय पर्याप्ति, श्वासोच्छ्वास प्रर्याप्ति, शरीर पर्याप्ति, भाषा पर्याप्ति, मनः पर्याप्ति, आहार पर्याप्ति।

आत्मा और पुद्गल का संयोग कर्म को उत्पन्न करता है। मानव एक क्षण भी बिना कर्म किये नहीं रह सकता। वह प्रतिक्षण मानसिक या शारीरिक कर्म करता रहता है। कर्म करने से भावों के अनुकूल परमाणु आकर्षित होकर आत्मा में चिपकते हैं। यह प्रक्रिया कर्म बद्धता की प्रक्रिया है। कर्म ही पूजा है। जो लोग कर्म में विश्वास करते हैं वे जीवन का साध्य प्राप्त कर लेते हैं। शरीर कर्मों का ही परिणाम है।